VOL- IX | ISSUE- VII | JULY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

मंगली की दरिद्रता की दास्तान 'साहब फिर कब आएँगे माँ !'

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगाँव
ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)।

हिंदी साहित्य को मराठी की स्वतंत्र दलित साहित्य धारा से परिचित करानेवाले तथा दलितों की वेदना को मुखर वाणी देकर, उनमें चेतना जगाने के लिए साहित्य लेखन करनेवाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ.दामोदर खडसे का जन्म 11 नवंबर 1948 में छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के पटना गाँव में हुआ। सृजनात्मक, आलोचनात्मक लेखन के साथ-साथ अनुवाद के क्षेत्र में भी आप ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दया पवार के 'बलन्तु' शीर्षक की आत्मकथा के अनुवाद 'अछूत' द्वारा मराठी दलित आत्मकथा साहित्य को हिंदी जगत से परिचित कराने का सर्वप्रथम प्रयास आप ने ही किया है।

दामोदर खडसे ने कहानी, उपन्यास, कविता, यात्रा व भेट वार्ताएँ, अनुवाद आदि विविध विधाओं पर लेखन कर एक दृष्टि से हिंदी साहित्य को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके साहित्यिक योगदान को देखते हुए इन्हें केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी न्यास आदि विविध संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया है। भटकते कोलंबस, पार्टनर, आखिर वह एक नदी थी, जन्मांतर गाथा, इस जंगल में, संपूर्ण कहानियाँ आदि आपके चर्चित कहानी संग्रह हैं। दामोदर खडसे की चर्चित कहानी 'साहब फिर कब आएँगे मां !' एक दीन, दलित स्त्री की वेदना को अभिव्यक्त करनेवाली कहानी है। इस कहानी को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार-विमर्श करना आवश्यक होगा। जैसे -

कथावस्तु :-

कहानी की प्रभावपूर्णता उसकी कथावस्तु और उसमें आए पात्रों पर निर्भर होती है। कथावस्तु की दृष्टि से देखा जाए तो 'साहब फिर कब आएँगे माँ !' इस कहानी का कथानक बहुत ही रोचक एवं प्रभावपूर्ण है। इस कहानी में मंगली नामक स्त्री की गरीबी से त्रस्त वेदना को चित्रित किया गया है। मंगली बरसों से होटल में बर्तन मांजने का काम करती है। घर में खाने की रोज की किल्लत और उसमें पति का शराब पीकर घर आना और गाली-गलोच तथा मारपीट करना आदि से मंगली त्रस्त है। बरसों से होटल में बर्तन मांजती और जूठन की मोहताज मंगली, जिसे आज तक दलित होने के कारण होटल के रसोई में घुसने तक नहीं दिया। उसी होटल में लघु-उद्योग पर राज्य स्तर की मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में होनेवाली मीटिंग के अवसर पर मात्र अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए उसे भोजन के लिए मक्के की रोटी और सरसों का साग बनाने के लिए कहा जाता है। उसके द्वारा बनाया भोजन मुख्यमंत्री को काफी पसंद आता है। परिणाम स्वरूप उसे पचास रूपये और रोटियाँ,पुलाव और साग-भाजी परोसकर मिलता है। जिस परिवार को आज तक होटल की जूठन खाकर दिन बिताना पड़ता था वे आज रोटियां, पुलाव जैसे पदार्थ खाकर प्रसन्न हो जाते

हैं और फिर ऐसा भोजन दुबारा मिलने के लिए साहब के फिर आने की अपेक्षा करते हैं। कहानी में गरीबी से और भूख से पीड़ित परिवार का चित्रण किया गया है।

मूल संवेदना :-

'साहब फिर कब आएँगे माँ !' यह कहानी एक दीन-दलित, गरीब और बर्तन मांजनेवाली स्त्री की वेदना एवं दरिद्रता को अभिव्यक्त करती है। दरिद्रता के कारण न कोई अपना, न बच्चों का, न परिवार का ठीक से पालन-पोषण कर सकता है, न बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था। कहानी में मंगली की दरिद्रता के कारण वह भी न अपना, न बच्चों का, न परिवार का ठीक से पालन-पोषण कर सकती है। इस कहानी के माध्यम से यही बताने का प्रयास किया है। कहानी दरिद्रता एवं भूख की समस्या को लेकर पाठक के मन पर गहरा चोट करते हुए, उसे सोचने के लिए विवश करती है। यही कहानी के कथानक की सफलता है और यही कहानी का मुख्य आशय तथा मूल संवेदना है।

मजदूर की समस्या :-

मजदूरों के जीवन का मूलाधार मजदूरी होती है। अगर एक भी दिन मजदूरी नहीं मिली, तो उसके घर का चूल्हा जलना मुश्किल होता है। ऐसे समय वे न अपना, न अपने बच्चों का पालन-पोषण ठीक से कर सकते हैं, न उनकी पढ़ाई लिखाई पूरी कर सकते हैं। इस कहानी में मंगली भी एक होटल में बर्तन मांजने का काम करती है। उसे दलित होने के कारण रसोई के अंदर प्रवेश तक नहीं मिलता। बाहर ही बर्तन मांजना और मिली हुई जूठन लेकर अपने घर जाना यही उसकी नीयति बन जाती है। होटल से मिली जूठन से वह अपने परिवार का पालन-पोषण करती है। खाने की समस्या के साथ-साथ उनके रहने की भी समस्या होती है। अक्सर मजदूर झोपड़पट्टी में थोड़ी सी जगह में रहने के लिए विवश होते हैं। मंगली भी ऐसी ही झोपड़पट्टी में रहती है। वहाँ के वातावरण को लेकर कहानीकार लिखते हैं कि ," समूची झोपड़पट्टी में कहीं न कहीं गाली-गलौज, झगड़ा-फसाद और चीखने-चिल्लाने की आवाजें उठ रही थी। उसके लिए पड़ोस में शराब पीकर पति द्वारा पिटती पत्नी का प्रतिकार और पति की गालियाँ कोई नयी नहीं थी। ऐसी घटनाएँ उसकी झोपड़ी में भी उठती हैं कभी-कभार। कोई ऐसी झगड़ों में दखल नहीं देता।"1 और सब अपने-आप शांत हो जाता है। दिनभर मजदूरी करने से मंगली को कब नींद लग जाती इसका पता तक नहीं चल जाता। मंगली के लिए भी अपने पति का शराब पीकर गालियाँ देना, पिटाई करना कोई नई बात नहीं थी। ऐसी ही एख मजदूर के रूप में मंगली की जिंदगी गुजरती रहती है।

अवसरवादी प्रवृत्ति :-

समाज में अवसरवादी प्रवृत्तिवाले लोगों की कमी नहीं है। जिस होटल में मंगली बर्तन मांजने का काम करती है उसका मैनेजर भी अवसरवादी प्रवृत्ति का है। होटल में जहाँ मंगली को अछूत समझकर रसोईघर में प्रवेश तक नहीं दिया जाता,वहाँ होटल का मैनेजर यह सोचकर कि आज," मुख्यमन्त्री जैसा मेहमान उसके होटल में पहली बार आ रहा था। इसका लाभ पब्लिसिटी के लिए भी होगा। मुख्यमन्त्री हैं तो कोई घोषणा भी होगी। उसके होटल का नाम दूर-दूर तक गूंजेगा। बिना किसी खर्च के..."2 इस अवसर का लाभ उठाने के लिए मुख्यमंत्री के भोजन में 'मक्के की रोटी और सरसो का साग' बनाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मंगली पर सौंपता है,जो मैनेजर के लिए असंभव था। तब वह यह नहीं सोचता कि वह अछूत है। उसकी अवसरवादी प्रवृत्ति यहाँ स्पष्ट रुप से यहाँ दिखाई देती है।

गरीबी का चित्रण :-

गरीबी की दास्तान बड़ी दुख भरी होती है। गरीबी से त्रस्त परिवार को आर्थिक दरिद्रता के कारण न पहनने के लिए ठीक से कपड़ा मिलता है, न खाने के लिए समय पर रोटी मिलती है। जब तक मजदूरी करें तब तक उनका चुल्हा जलते रहता है, मजदूरी नहीं मिली तो उन्हें भूखे रहना पड़ता है। कहानी की मंगली भी आर्थिक दरिद्रता से त्रस्त कुछ ऐसा ही जीवन जीने के लिए विवश है। वह होटल में बर्तन मांजने का काम करती है और होटल से मिली जूठन पर अपना तथा अपने परिवार का

पालन-पोषण करती है। एक दिन जब मंगली को मुख्यमंत्री का भोजन बनाने की जिम्मेदारी दी जाती है और मंगली उसे स्वीकार कर उसे भलि-भाँति निभाती है तब उसे प्लास्टिक में कुछ होटल का बचा हुआ भोजन दिया जाता है। आज " भोजन का प्लास्टिक का बैग हाथों में लेकर कितनी प्रसन्न थी वह। उसके पैर अचानक पंख लगने लगे उसे। घर की ओर तेज कदमों से निकली वह। बार-बार प्लास्टिक की थैली को ठीक से टटोलती- इसमें क्या-क्या होगा... कितना होगा। तीनों बच्चों को पूरा पड़ेगा या नहीं..."3 कई दिनों के बाद होटल से परोसकर मिला हुआ यह भोजन उसके लिए बहुत खुशियाँ देता है अन्यथा हर दिन उसे चुल्हा जलाने की तक फिक्र रहती है। यह परिस्थिति उसकी गरीबी की पीड़ा को व्यक्त करती है। कहानीकार ने यहाँ गरीबी को लेकर पाठक को सोचने के लिए विवश कर दिया है।

जूठन खाने की विवशता :-

समाज में ऐसे कई लोग हैं, जो दो वक्त की रोटी भी जुटा नहीं पाते। मजदूरी करने पर ही उसका चुल्हा जलता है। कई लोग तो जूठन खाकर ही जीते हैं। पेट की आग बहुत भयानक होती है, वह मनुष्य को जूठन खाने के लिए भी विवश करती है। जूठा ही उसके लिए महाभोज बन जाता है। इस कहानी में मंगली भी बर्तन मांजने की मजदूरी करती है, लेकिन उसे मजदूरी के बदले होटल की बची हुई जूठन मात्र मिलती है। लेकिन होटल में मुख्यमंत्री के आने के कारण मुख्यमंत्री के भोजन की जिम्मेदारी जब मंगली पर दी जाती है, तो अचानक महत्व मिलने पर वह हड़बड़ा जाती है। आज उसे खाना पकाना है। किसके लिए उसे नहीं मालूम परंतु " आज उसकी जरूरत महसूस हुई, इससे उसे बहुत अच्छा लगा। प्रसन्न हुई वरना होटल के पिछवाड़े ढेरों बर्तनों के बीच वह अपने साथियों के साथ बर्तन मांजती रहती और जूठन की भी मोहताज रहती।"4 अन्यथा प्लेटें उठानेवाले वेटरों तक ही सारा अच्छा जूठन गायब हो जाता था। लेकिन आज स्वयं भोजन बनाने की जिम्मेदारी के कारण उसे कुछ मिलने की आशा थी। वह थोड़ा सा परोसा खाना लेकर बच्चों को खिलाने के लिए खुशियों के साथ अपने घर लौट जाती है, मानो जूठन ही उसके लिए बड़े पकवान हो।

पतिपरायणा नारी :-

इस कहानी में मंगली का पति शराबी है। वह शराब पीकर पत्नी को, बच्चों को गाली- गलौज करता है तथा पिटाई भी करता है, बावजूद इसके उसे अपने पति के प्रति स्नेह था। उसका एक पतिपरायणा नारी का रूप हमारे सामने तब आता है जब मंगली परोसा हुआ खाना लेकर घर पहुंचती है और अपने बच्चों को खिलाती है। लेकिन आज उसका पति घर पर नहीं था। वह चौकीदार है और आज उसकी रात पाली थी। वह सोचती है कि कितना अच्छा होता वह भी आज घर पर होता। खाने का दृश्य उसकी आंखों के सामने घूमते रहता है। लेकिन ," पति के न होने के कारण व खाना भी न खा पायी। बच्चों के साथ... उतना ही। अकेले खाना उसे कुछ अपराध-सा लगने लगा।"5 और वह भूखे पेट ही रहती है। यहाँ उसका पति पतिपरायणा रूप हमारे सामने आता है। पति के शराब पीकर गाली-गलोज तथा पिटाई करने के बावजूद भी उसके प्रति प्रेमभाव रखते हुए उसके भोजन से चिंतित रहनेवाली कोई पतिपरायणा नारी ही हो सकती है।

वात्सल्यमयी माँ :-

कहानी में मंगली का एक वात्सल्यमई माँ का रूप भी हमारे सामने आता है। होटल में बर्तन मांजने के बाद जो भी चीजें खराब हो जाती है वह मंगली को दी जाती थी। वही चीजें लाकर अपने बच्चों को खिलाकर वह सुख पाती थी। उसका वात्सल्यमयी माँ का रूप कहानी में तब दिखाई देता है, जब वह होटल से परोसी हुई जूठन लेकर घर आती है, तो स्वयं पहले न खाकर " बडे बेटे के आने तक वह जागती रही। उसी के साथ थोड़ा खाना खाया। बेटा थका हुआ था। खाना खाते सो गया। अब वह अकेली रह गयी। बच्चे खाकर सो गये। उनके चेहरे का संतोष उसे सुख दे रहा था।"6 माँ भले ही भूखी रहे, बच्चों ने खाया कि उसे चैन मिलता है, उसकी

भूख नष्ट हो जाती है। बच्चों की खुशियाँ ही उसकी खुशियाँ हो जाती है। यही माँ का वात्सल्य रूप है, जो अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

भूख की लालसा :-

होटल में मंगली द्वारा बनायी गयी 'मक्के की रोटी और सरसो का साग' मुख्यमंत्री को बहुत पसंद आता है। वे उस भोजन की बड़ी तारीफ करते हैं। परिणामस्वरूप मुख्य रसोईया खुश होकर मंगली को पचास रुपये देता है। जिस टोकरी में मंगली सरसों का साग लाई थी, वह टोकरी आज रसोईया ने रोटियाँ, पुलाव और साग भाजी से भर दी थी। मंगली बहुत खुश थी। वह टोकरी लेकर अपने घर पहुँची, तो देखा कि छह साल की छोटी बेटी बेसब्री से उसका इंतजार कर रही थी। टोकरी उतारकर नीचे रखते ही वह सारे रखे हुए भोजन से मनपसंद चीजें निकालने लगी। नन्हा बेटा टोकरी पकड़कर खड़ा था। वह बच्चों को धीरज रखने के लिए कह रही थी, लेकिन दोनों बच्चे टोकरी से चीजें निकालकर खा रहे थे। खाना भरपूर था। आज सभी बच्चों ने भरपेट खाया। पहले ही रात को मंगली ने बच्चों को बताया था कि होटल में बहुत बड़े साहब आएंगे और उनके लिए खास भोजन बनेगा। बच्चों ने जब पेट भर खाया, टोकरी से अलग होकर घड़े से पानी पिया और एक गिलास पानी मंगली को देते हुए उसकी छह साल की बेटी का यह पूछना कि," माँ साहब फिर कब आएंगे ?"7 यह कल के भोजन की और उससे भूख मिटाने की लालसा को व्यक्त करता है।

शीर्षक की सार्थकता :-

दामोदर खडसे ने कहानी के शीर्षक को बड़ी चतुराई के साथ सार्थक बनाया है। कहानी पढ़ते समय पाठक के मन में शीर्षक को लेकर कुतूहल बराबर बना रहता है। कहानी के शीर्षक की सार्थकता का समाधान पाठक को कहानी के अंत में मिलता है। जब होटल से मंगली को दिया हुआ खाना सब बच्चे भरपेट खाते हैं और उसकी छह साल की बेटी जब पूछती है कि," मां साहब फिर कब आएंगे ? " तभी शीर्षक का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और पाठक का समाधान भी हो जाता है। गरीबों की भूख की लालसा एवं पीड़ा कहानी के शीर्षक से स्पष्ट हो जाती है।

निष्कर्ष :-

दामोदर खडसे द्वारा लिखित 'साहब फिर कब आएँगे माँ !' यह कहानी उस दीन-दलित, गरीब और बर्तन मांजनेवाली एक स्त्री की दरिद्रता को व्यक्त करती है, जो अपनी गरीबी के कारण न अपना, न बच्चों का, न परिवार का पालन-पोषण कर सकती है, न बच्चों की ठीक से पढ़ाई-लिखाई कर सकती है। कहानी के माध्यम से कुछ निष्कर्ष बिंदू हमारे सामने आते हैं। जैसे -

- समाज में भूख से पीड़ित जी रहे बच्चों की वेदना हमारे सामने आती है। भूख की लालसा को लेकर बच्चों का तड़पना और जूठन खाकर भूख की संतुष्टि पाना गरीबी और दरिद्रता से त्रस्त बच्चों की मानो नीयति बन गई हो। अगर कभी कभार जूठन ही सही अच्छा भोजन मिलता है, तो वह कितने खुश हो जाते हैं इसका बड़ा मार्मिक चित्रण कहानीकार ने इस कहानी में किया है।
- मंगली के माध्यम से एक वात्सल्यमई माँ का रुप यहाँ व्यक्त होता है।
- पति द्वारा प्रताड़िना होने के बावजूद भी उसके भोजन की चिंता करनेवाली पतिपरायणा नारी भी यहाँ मिलती है।
- गरीबी, दरिद्रता, पति तथा समाज द्वारा उपेक्षा के बावजूद यहाँ पुरुष की अपेक्षा परिवार की जिम्मेदारी का बखूबी से वहन करनेवाली सक्षम नारी चित्रित हुई है।
- कहानी में चित्रित होटल मैनेजर के समान अवसरवादी लोगों की भी समाज में कमी नहीं है।
- आज भी समाज में जाति प्रथा तथा छुआछूत के कारण महिलाओं की पग पग पर प्रताडना हो रही है। जिसका विरोध करने के लिए नारी को अब सक्षम बनने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर 'साहब फिर कब आएंगे मां ?' यह कहानी एक ओर मंगली के माध्यम से वात्सल्यमई माँ, पतिपरायणा स्त्री के साथ साथ अपने परिवार का भरन-पोषण करनेवाली सक्षम नारी को प्रस्तुत करती है, तो दूसरी ओर गरीबी और दरिद्रता से त्रस्त तथा भूख से पीड़ित लोगों के प्रति पाठक को सोचने के लिए विवश भी करती है।

संदर्भ सूची :-

1) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.126
2) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.123
3) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.124-125
4) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.124
5) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.126
6) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.126
7) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटील - कहानी संकलन - प्र. सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर - पृ.128

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com